हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

फरवरी, 2021

एम.एच.डी.-12 : भारतीय कहानी

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *__प्रथम__ प्रश्न __अनिवार्य__ है । शेष में से किन्हीं __तीन__ प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं ***दो*** की सन्दर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *2×10=20*

(क) उन्होंने मन ही मन सोचा कि अगर इस वक्त कुछ बोलते हैं तो अगले ही पल वे बेभाव हो जाएँगे । नहीं, अभी उन्हें बेभाव होने की इच्छा नहीं है । बल्कि वे आँखें बंद किए हुए ही महसूस करेंगे कि डॉक्टर आया है, जाँच की है । उसके बुलाने पर उन्होंने जवाब नहीं दिया तो उसने संदेह व्यक्त करते हुए इशारे से समझाया है, सेरेब्राल थ्रबोसिस हो सकता है, ऐसा होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है । निर्देश दे रहा है कि एकदम सुलाए रखें । कम्प्लीट रेस्ट ।

(ख) इन अत्यन्त दारुण विचारों से मेरा दिल फटने लगा । एक लम्बी साँस निकल गई । चेन्नम्मा चुपचाप पल्लू का सिरा मरोड़े जा रही थी, मेरा लम्बा साँस छोड़ना

देखकर उसने मेरी ओर देखा । उस समय मुख पर चिंता झलक रही थी । चार और लोगों की भाँति अपना घर बसाना छोड़कर यह सीधी-सादी लड़की उनकी एक घृणित रस्म की बलि चढ़ गई है । इस विचार के आते ही मैं अपने को रोक न पाया । मेरी आँखों में आँसू आ गए ।

(ग) गाँव के लोग कहते हैं कि जीवण का दिमाग फिर गया है; क्योंकि वह बड़े अस्त-व्यस्त ढंग से जीता है । जीता भी क्या है, बस यों ही रहता है । ऊपर से जो कुछ दिखाई देता है, उसे देखकर एक के बाद एक बहुत-से-लोग यही समझने लगे हैं । कहाँ आज का फटेहाल जीवण और कहाँ आज से चार-पाँच साल पहले का ताँबे की चमचमाती मूर्ति जैसा जीवण ! कुछ लोग इसका रहस्य भी समझ गए हैं और उनका विरोध नहीं करते जो समझते हैं कि जीवन का दिमाग फिर गया है । जीवण स्वयं भी इस बात का विरोध नहीं करता, क्योंकि उसे मालूम है कि उसे क्या हुआ है ।

(घ) भय ! अत्यन्त आदिम, अत्यन्त सहज स्वाभाविक वास्तविकता । अगर किसी में वह उपजा, तो वह स्वयं होता है स्रष्टा । कितने विचारों, कितने आचारों, कितने स्वप्नों, कितनी कल्पनाओं की सृष्टि कर डालता है, एक साथ इतने सारे लोग आगे-पीछे, आजू-बाजू से खड़े, लेकिन भय की कीमिया लादकर जैसे एक-दूसरे से अलग-थलग, भीतर भय की डोर को अनुभव करने के

बाद, जैसे और किसी दूसरी चीज़ को, जीव को, या भाव को अनुभव करने की जिम्मेदारी उनकी नहीं रह गई । झूलते रहें धनुष, टंगिया, कटार, ढोए रहें तलवार, बरछे, लाठी — अब ये सब हैं निरर्थक और ग़ैरज़रूरी बोझ हैं — सिर्फ इतना कि उन्हें ढोए रहना नियति है ।

2. तेलुगु के प्रगतिशील आंदोलन में कालीपट्नम रामाराव के योगदान की चर्चा करते हुए 'प्राणधारा' कहानी की संवेदना पर विचार कीजिए । *10*

3. 'बघेई' कहानी की प्रतीकात्मकता पर प्रकाश डालिए । *10*

4. बाल मनोविज्ञान की दृष्टि से 'ओडरे चुरुंगन मेरे' कहानी पर विचार कीजिए । *10*

5. 'पाँच पत्र' कहानी का जीवन दर्शन समझाइए । *10*

6. 'टोबा टेक सिंह' कहानी के आधार पर देश विभाजन की त्रासदी का विवेचन कीजिए । *10*

7. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणी लिखिए : *2×5=10*

(क) डी. जयकांतन

(ख) 'अपने लिए शोक गीत' कहानी के अविनाश

(ग) असमिया कथाकार इंदिरा गोस्वामी

(घ) कश्मीरी कथाकार दीनानाथ नादिम